

**भारत सरकार**  
**मत्स्यपालन, पशुपालन और डेयरी मंत्रालय**  
**पशुपालन और डेयरी विभाग**  
**लोकसभा**  
**अतारांकित प्रश्न संख्या-2613**  
**दिनांक 05 अगस्त, 2025 के लिए प्रश्न**

**आनुवंशिक गुणवत्ता और संकर नस्ल के मवेशियों में सुधार**

**2613. श्री बस्तीपति नागराजूः**

क्या मत्स्यपालन, पशुपालन और डेयरी मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या सरकार ने विशेष रूप से देशी और संकर नस्ल के गोजातीय पशुओं को गांठदार त्वचा रोग, खुरपका और मुंहपका रोग तथा अन्य जूनोटिक संक्रमणों जैसे उभरते रोगों के प्रति अधिक प्रतिरोधी बनाने के उद्देश्य से कोई कार्यक्रम या परियोजनाएँ शुरू की हैं और यदि हाँ, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है;

(ख) सरकार द्वारा रोग प्रतिरोधक गुणों से समझौता किए बिना देशी और संकर नस्ल के मवेशियों की आनुवंशिक गुणवत्ता में वैज्ञानिक रूप से सुधार लाने के लिए किए जा रहे उपायों का ब्यौरा क्या है;

(ग) क्या सरकार द्वारा भारतीय गोवंश नस्लों में रोग प्रतिरोधकता के आनुवंशिक विहकों की पहचान करने के लिए राष्ट्रीय अनुसंधान संस्थानों या विश्वविद्यालयों के साथ कोई समर्पित अनुसंधान परियोजनाएँ या सहयोग शुरू किया जा रहा है और यदि हाँ, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है और यदि नहीं, तो इसके क्या कारण हैं; और

(घ) सरकार द्वारा वैज्ञानिक नस्ल सुधार और रोग निवारण में तीव्रता लाने के लिए और विशेषकर रोग-प्रवण क्षेत्रों में नए नस्ल विकास संस्थानों की स्थापना करने या विद्यमान संस्थानों को सुदृढ़ करने के लिए उठाए गए या उठाए जाने वाले कदमों का ब्यौरा क्या है?

**उत्तर**  
**मत्स्यपालन, पशुपालन और डेयरी राज्य मंत्री**  
**(प्रो. एस.पी. सिंह बघेल)**

(क) और (घ) जी नहीं, हालांकि विभाग सभी राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों में पशुधन स्वास्थ्य एवं रोग नियंत्रण कार्यक्रम (LHDCP) योजना को क्रियान्वित कर रहा है, जिसका उद्देश्य पशुओं के रोगों के लिए रोगनिरोधी टीकाकरण, पशु चिकित्सा सेवाओं की क्षमता के निर्माण, रोग निगरानी और पशु चिकित्सा अवसंरचना को सुदृढ़ करके पशु स्वास्थ्य के लिए जोखिम को कम करना है, जो पशुधन स्वास्थ्य के सुधार और संरक्षण में योगदान देता है। पशुधन स्वास्थ्य एवं रोग नियंत्रण कार्यक्रम (LHDCP) के पशु रोग नियंत्रण हेतु राज्यों की सहायता (ASCAD) के अंतर्गत लम्पी त्वचा रोग (LSD) के लिए टीकाकरण हेतु वैक्सीन खुराक की खरीद और संबंधित रोग नियंत्रण कार्यकलापों हेतु मांग के अनुसार राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों को वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है। वर्ष 2024-25 के दौरान राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों को 196.61 करोड़ रुपये की निधियां जारी की गईं। राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों को जमीनी स्तर पर सहायता के लिए केंद्रीय विशेषज्ञ टीमों के दौरों के माध्यम से तकनीकी रूप से भी सहायता प्रदान की जा रही है, जिसमें राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों के

प्राधिकारियों को संवेदनशील बनाने के लिए वास्तविक और वर्चुअल बैठकें शामिल हैं। राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों को टीकाकरण और उपचार सहित एलएसडी के नियंत्रण के लिए दिशानिर्देश/परामर्शियां कार्यान्वयन हेतु परिचालित की गई हैं ताकि एक निश्चित समय-सीमा के भीतर इस बीमारी की रोकथाम और नियंत्रण किया जा सके।

एलएचडीसीपी के पशु रोग नियंत्रण के लिए राज्यों को सहायता (ASCAD) के अंतर्गत रोग निदान के लिए प्रयोगशालाओं और जैविक उत्पादन इकाइयों (BPU) की स्थापना और सुदृढ़ीकरण तथा नैदानिक किटों/टीकों के उत्पादन में वृद्धि, क्षमता निर्माण और अच्छी पशुपालन प्रथाओं, जैव सुरक्षा/स्वच्छता उपायों, वेक्टर नियंत्रण आदि जैसे विषयों पर जागरूकता/प्रशिक्षण के लिए राज्य/संघ राज्य क्षेत्र को सहायता प्रदान की जाती है।

त्वरित नियंत्रण और शमन सुनिश्चित करते हुए पशु रोग के प्रकोपों के प्रबंधन और प्रतिक्रिया हेतु पशुधन रोगों के लिए संकट प्रबंधन योजना (CMP) तैयार की गई है। पशुधन स्वास्थ्य और रोग नियंत्रण को बेहतर बनाने हेतु पशु चिकित्सा देखभाल में सर्वोत्तम प्रथाओं के लिए मानक पशु चिकित्सा उपचार दिशानिर्देश (SVTG) तैयार किए गए हैं।

इसके अलावा, विभाग भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद-राष्ट्रीय पशु चिकित्सा महामारी विज्ञान और रोग सूचना विज्ञान संस्थान (ICAR-एNIVEDI), बिंगलुरु को सीरो-निगरानी, सीरो-मॉनिटरिंग, रोग चेतावनी के लिए 100% केंद्रीय सहायता प्रदान करता है और राष्ट्रीय पशु रोग रेफरल विशेषज्ञ प्रणाली (NADRES) प्लेटफॉर्म के माध्यम से किसानों, पशु चिकित्सकों और क्षेत्र के अधिकारियों को स्थानीय भाषाओं में 15 बीमारियों पर अलर्ट भी प्रदान किए जाते हैं।

(ख) रोग प्रतिरोधक गुणों से समझौता किए बिना देशी और संकर (क्रॉसब्रीड) नस्ल के गोपशुओं की आबादी की आनुवंशिक गुणवत्ता में वैज्ञानिक रूप से सुधार लाने के लिए राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों द्वारा किए गए प्रयासों को अनुपूरित और संपूरित करने के लिए, भारत सरकार देश भर में राष्ट्रीय गोकुल मिशन को लागू कर रही है और इस योजना के तहत निम्नलिखित उपाय किए गए हैं:

(i) राष्ट्रव्यापी कृत्रिम गर्भाधान कार्यक्रम: राष्ट्रीय गोकुल मिशन के अंतर्गत, पशुपालन और डेयरी विभाग, बोवाइन पशुओं के दूध उत्पादन और उत्पादकता को बढ़ावा देने के लिए कृत्रिम गर्भाधान कवरेज का विस्तार कर रहा है।

(ii) पशुपालन और डेयरी विभाग ने सेक्स सॉर्टिंग सीमन उत्पादन सुविधाएँ स्थापित की हैं और सेक्स सॉर्टिंग सीमन का उपयोग करके त्वरित नस्ल सुधार कार्यक्रम लागू किया है, जिसका उद्देश्य 90% सटीकता से बछड़ियों का उत्पादन करना है, जिससे दुधारू पशुओं की संख्या में वृद्धि, नस्ल सुधार और किसानों की आय में वृद्धि होगी। सरकार ने किसानों को उचित दरों पर सेक्स सॉर्टिंग सीमन उपलब्ध कराने के लिए देशी रूप से विकसित सेक्स सॉर्टिंग सीमन तकनीक शुरू की है।

(iii) इन-विट्रो फर्टिलाइजेशन (IVF) तकनीक का कार्यान्वयन: उल्कष पशुओं के प्रजनन हेतु विभाग ने 23 आईवीएफ प्रयोगशालाएँ स्थापित की हैं। एक ही पीढ़ी में बोवाइन आबादी के आनुवंशिक उन्नयन में इस तकनीक की महत्वपूर्ण भूमिका है। इसके अलावा, किसानों को उचित दरों पर तकनीक उपलब्ध कराने के लिए सरकार ने आईवीएफ मीडिया की शुरुआत की है।

(iv) संतति परीक्षण एवं नस्ल चयन: देशी नस्लों के उच्च आनुवंशिक गुणता वाले सांडों के उत्पादन हेतु पशुपालन और डेयरी विभाग, संतति परीक्षण एवं नस्ल चयन कार्यक्रम क्रियान्वित कर रहा है। सीमन केंद्रों को देशी नस्लों एवं संकर (क्रॉसब्रीड) नस्लों के HGM वाले सांड उपलब्ध कराए गए हैं।

(v) जीनोमिक चयन: उच्च आनुवंशिक क्षमता (HGM) वाले पशुओं का चयन करने तथा गोपशुओं और भैंसों के आनुवंशिक सुधार में तेजी लाने के लिए, विभाग ने एकीकृत जीनोमिक चिप्स विकसित की हैं - देशी गोपशुओं के लिए गौ चिप और भैंसों के लिए महिष चिप - जो विशेष रूप से देश में उच्च आनुवंशिक पशुओं के जीनोमिक चयन को आरंभ करने के लिए डिजाइन की गई हैं।

(vi) ग्रामीण भारत में बहुउद्देशीय कृत्रिम गर्भाधान तकनीशियन (मैत्री): इस योजना के तहत मैत्री को किसानों के द्वार पर गुणवत्तापूर्ण कृत्रिम गर्भाधान सेवाएं प्रदान करने के लिए प्रशिक्षित और सुसज्जित किया जाता है।

इसके अलावा, बोवाइन आबादी के समग्र और वैज्ञानिक विकास के लिए अवसंरचना को सुदृढ़ करने के लिए उल्कृष्टता केंद्र, मौजूदा सीमन स्टेशनों, जीनोमिक केंद्र, सेक्स सॉर्टिंग सीमन उत्पादन सुविधा और आईवीएफ प्रयोगशालाओं की स्थापना/सुदृढ़ीकरण के लिए परियोजनाएं संस्थीकृत की गई हैं।

आईसीएआर संस्थान रोग प्रतिरोधक क्षमता से समझौता किए बिना आनुवंशिक क्षमता में सुधार के लिए चयनात्मक प्रजनन और आनुवंशिक मूल्यांकन सहित कई उपाय कर रहे हैं। गोपशुओं की पहली कृत्रिम नस्ल फ्राइज़वाल (Frieswal) को 5/8 होल्स्टीन फ्रीज़ियन और 3/8 साहीवाल आनुवंशिक संरचना को शामिल करके विकसित किया गया था।

(ग) पशुपालन और डेयरी विभाग राष्ट्रीय पशुधन मिशन क्रियान्वित कर रहा है और इस योजना के अंतर्गत 'अनुसंधान एवं विकास तथा नवाचार' नामक एक घटक है, जिसके माध्यम से पशुधन प्रजातियों के उन्नयन, चारा विकास तथा पशुधन एवं पशुधन उत्पादों में मूल्य संवर्धन के लिए अनुसंधान कार्यकलापों को प्रोत्साहित करने हेतु वित्त पोषण सहायता प्रदान की जाती है।

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (ICAR) के अनुसार, पशु विज्ञान संस्थानों ने भारतीय गोपशु नस्लों रोग प्रतिरोधक क्षमता के आनुवंशिक मार्करों की पहचान हेतु अनुसंधान परियोजनाएँ शुरू की हैं। परियोजना का विवरण निम्नलिखित है: (i) आईसीएआर-राष्ट्रीय पशु आनुवंशिक संसाधन ब्यूरो (NBAGR), करनाल में आईसीएआर के राष्ट्रीय कृषि विज्ञान कोष से वित्तीय सहायता के साथ मार्च 2024 (तीन साल की अवधि के लिए) में "देशी गोपशुओं की बोवाइन एनाप्लास्मोसिस के प्रति कम संवेदनशीलता के आनुवंशिक आधार को समझना" शीर्षक से एक परियोजना शुरू की गई है और (ii) गोपशु देशी नस्ल (साहीवाल) पर अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना (AICRP) को कार्यान्वित किया जा रहा है, जिसका प्रमुख केंद्र आईसीएआर-सीआईआरसी, मेरठ है। आईसीएआर-आईवीआरआई इस परियोजना के तहत सहयोगी इकाइयों में से एक के रूप में कार्य करता है, जो साहीवाल नस्ल के आनुवंशिक सुधार, संरक्षण और सतत उपयोग पर केंद्रित अनुसंधान और विकास प्रयासों में योगदान देता है।

\*\*\*\*